विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 20 | अंक: 73 | मार्च, 2026

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

9-10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी-शिक्षण : नवाचार और संभावनाएँ' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम के अंतर्गत कवि-सम्मेलन, शैक्षणिक सत्र एवं रचना-पाठ का सत्र हुआ।

पृ. 2-3

विश्व हिंदी सचिवालय का 18वाँ स्थापना दिवस

11 फ़रवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की 18वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'हिंदी काव्य का अध्यापन और अध्ययन' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

पृ 3-5

विश्व नाटक दिवस 2026

विश्व नाटक दिवस के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसका पुरस्कार-वितरण-समारोह 25 मार्च, 2026 को सचिवालय के सभागार में संपन्न हुआ।

पृ.5

श्रीमती अर्चना उपाध्याय की पुस्तक 'ससुराल गेंदा फूल' का लोकार्पण

11 जनवरी, 2026 को श्रीमती चित्रा मुद्गल द्वारा दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में श्रीमती अर्चना उपाध्याय की पुस्तक 'ससुराल गेंदा फूल' का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार सुभाष चंदर, रिंकल शर्मा, सविता चड्ढा सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

पृ.14

पद्मश्री पुरस्कार 2026

वर्ष 2026 के लिए भारत की राष्ट्रपति ने 131 पद्म पुरस्कारों की घोषणा की है, जिनमें हिंदी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सेवा व योगदान के लिए श्री कैलाश चंद्र पंत (भारत) एवं डॉ. ल्युडमिला विक्टोरोवना खोखलोवा (रूस) के नाम भी शामिल हैं।

पृ. 14-15

श्रद्धांजलि

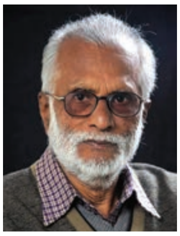

7 जनवरी, 2026 को साहित्यिक पत्रिका 'पहल' के संपादक व विख्यात कथाकार ज्ञानरंजन का जबलपुर में निधन हो गया। साठोत्तरी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर ज्ञानरंजन का जन्म 21 नवंबर, 1936 को हुआ था। उन्होंने अपने नवाचारी सृजन से हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार के रूप में और साठोत्तरी पीढ़ी के साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ.15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *विश्व हिंदी दिवस 2026* — पृ. 6-9
- *सम्मेलन , संगोष्ठी, कार्यशाला, पुस्तक मेला, उत्सव* — पृ. 9-12
- *आभासी कार्यक्रम* — पृ. 13
- *साक्षात्कार* — पृ.13-14
- *लोकार्पण* — पृ. 14
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — पृ. 14-15
- *श्रद्धांजलि* — पृ. 15
- *संपादकीय* — पृ. 16

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

9-10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग (मॉरीशस) के तत्त्वावधान में तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (भारत), विद्या समिति, आर्य सभा (मॉरीशस), हिंदी स्कूल फ़ेडेरेशन (मॉरीशस), वाक्वा सांस्कृतिक सभा (मॉरीशस), साहित्य संचय शोध संवाद फ़ाउंडेशन (भारत), अजमेर लेखिका मंच (भारत) एवं हिंदी सोसाइटी (सिंगापुर) के सहयोग से 'हिंदी-शिक्षण : नवाचार और संभावनाएँ' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया।

9 जनवरी, 2026 को अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन हुआ, जिसमें मॉरीशस, भारत, कतर, सिंगापुर और नेपाल से 18 कवियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

मॉरीशस की 'शुभ लगन मंडली' ने 'राधा के शोभेला माँग के सिंदूरा' लोकगीत प्रस्तुत किया, जिसमें राधा-कृष्ण के प्रेम का चित्रण करते हुए लोक-संस्कृति को दर्शाया गया।

उद्घाटन-समारोह

उद्घाटन-समारोह के आरंभ में भारत से डॉ. दीप्ति अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक 'कुली से कुलीन बनने का सफ़र' में संग्रहित कविताओं पर आधारित चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री धरमबीर गोकुल, जीसीएसके द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विश्व हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में आयोजित 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी गीत लेखन प्रतियोगिता' के विजेताओं के नामों की घोषणा की गई। 5 भौगोलिक क्षेत्रों में प्रथम स्थान पर आए विजेताओं के गीतों को वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने सबका स्वागत करते हुए यह आशा व्यक्त की कि सचिवालय के कार्यक्रमों में देश-विदेश के हिंदी प्रेमियों की सहभागिता बढ़ती रहेगी और हिंदी की गूँज विश्वभर में सुनाई देगी।

शिल्पाकर्ण विश्वविद्यालय, थाईलैंड के हिंदी व्याख्याता, डॉ. परमत खाम ने 'थाईलैंड में हिंदी-शिक्षण' पर वक्तव्य देते हुए कहा कि कई संस्थानों के निरंतर प्रयासों से थाईलैंड में हिंदी-शिक्षण का विकास हुआ तथा नई तकनीक के प्रयोग से भविष्य में हिंदी सीखने के अवसर बेहतर होंगे।

मॉरीशस की भारतीय उपउच्चायुक्त, श्रीमती अपर्णा गणेसन ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संदेश प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी के वैश्विक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए नई पीढ़ी से हिंदी को अपनाने का आह्वान किया।

मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री धरमबीर गोकुल ने डिजिटल युग में एआई के माध्यम से हिंदी का संवर्धन करने पर ज़ोर दिया। उनके कर-कमलों द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक शोध पत्रिका 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 17वें अंक (मुद्रित व इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप) का लोकार्पण किया गया।

इस अवसर पर भारत से पधारे आई.सी.सी.आर. के कलाकारों ने 'सात चक्र' नृत्य प्रस्तुत किया। कलाकारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

शैक्षणिक-सत्र

प्रथम शैक्षणिक सत्र में डॉ. अंजना जमातिया ने 'हिंदी-शिक्षण में डिजिटल उपकरणों का प्रयोग', डॉ. विनीता राठौड़ ने 'कतर में हिंदी-शिक्षण नवाचार एवं संभावनाएँ', श्रीमती प्रसून सिंह ने 'सिंगापुर में हिंदी-शिक्षण में नवाचार' और डॉ. दीप्ति अग्रवाल ने 'विश्वविद्यालयीय स्तर पर हिंदी-शिक्षण' पर वक्तव्य प्रस्तुत किए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. परमत खाम ने सुझाव दिया कि सम्मेलन में प्रस्तुत विचारों को पत्रिका या पुस्तक के रूप में प्रकाशित करके विश्व के सभी हिंदी शिक्षकों तक पहुँचाया जाए।

द्वितीय सत्र में डॉ. शीतल मीना (भारत) ने 'नई शिक्षा नीति 2020 एवं उच्च शिक्षा', डॉ. पवित्र श्रीवास्तव ने 'हिंदी-शिक्षण की संभावनाएँ', प्रो. राजमुनी ने 'हिंदी-शिक्षण के बहुआयामी दृष्टिकोण', डॉ. शुभंकर मिश्र ने 'हिंदी शिक्षण के उद्देश्य' और श्री हिंग्लाज दान रत्नू ने 'हिंदी-शिक्षण में नवाचार' पर आलेख पढ़े। मॉरीशस से डॉ. कीर्ति देवी रामजतन ने 'पंचतंत्र, हितोपदेश और सूक्तियों के माध्यम से मूल्यपरक हिंदी शिक्षण' पर अपने विचार रखे।

सत्र के अध्यक्ष डॉ. ललित कुमार सिंह ने कहा कि शिक्षक कभी तकनीक का विकल्प नहीं हो सकता, क्योंकि शिक्षक मानवीय संवेदना को लेकर चलता है, जबकि तकनीक केवल सहायक होती है।

सत्र के अंत में मॉरीशस से 'रानी भोजपुरी गीत गवाई मंडली' के कलाकारों ने 'मंदर पूजन एवं झूमर' लोकगीत गाकर दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। साहित्य संचय शोध संवाद फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष, श्री मनोज कुमार ने धन्यवाद-ज्ञापित किया तथा डॉ. विनीता राठौड़ ने मंच-संचालन किया।

तृतीय सत्र में भारत से डॉ. नीरू, डॉ. संजय कुमार, डॉ. अपराजिता शर्मा, और डॉ. अनीता नैन तथा मॉरीशस से श्री विशाल भोला, श्रीमती साधना जगरनोथ और श्रीमती प्रभा देवी शंकर ने क्रमिक रूप से अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. राज शेखर ने कहा कि भाषा में नवीनता और परंपरा का संतुलन होना चाहिए, ताकि सीखना और सिखाना आसान और प्रभावी हो। इस सत्र का संचालन श्रीमती अंजू पुरोहित (मलेशिया) द्वारा किया गया।

रचना-पाठ

इस सत्र की शुरुआत स्वरांजलि ग्रुप (मॉरीशस) के कलाकारों द्वारा रामचरितमानस के दोहे और चौपाई के गायन से हुई। यालिनी कृषा ने दक्षिणी कर्नाटक का पारंपरिक लोकनृत्य प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् डॉ. ममता जायसवाल ने ब्लॉक-अनब्लॉक (लघुकथा), प्रो. राज शेखर ने 'उड़ने वाली लोमड़ी' (कहानी), श्रीमती सविता तिवारी ने 'किस्सा-किस्सा मॉरीशस' (लघुकथा), श्री धनराज शंभु ने 'हम अपने ही शत्रु हैं' (कहानी), कुसुमलता मलिक ने 'उपहार' (कहानी), श्रीमती कुंदन सिंह ने 'इंतज़ार तेरा' (कहानी) तथा डॉ. पामेला एरिक्सन ने अपनी डायरी प्रस्तुत की।

समापन-समारोह

समापन-समारोह में हिंदी विभाग, पी.एस., प्रेम नगर, छत्तीसगढ़, भारत से डॉ. बी. यदु ने सरस्वती-वंदना और प्रो. सुदर्शन जगेसर डीएवी कॉलिज के शिक्षकों ने एक हिंदी गीत प्रस्तुत किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सम्मेलन के दौरान हुई गतिविधियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए और महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. अलका धनपत ने सम्मेलन के सत्रों का विवरण दिया।

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) ने सम्मेलन के प्रस्तावों को पारित कराया।

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. महेन्द गंगापरसाद, पीडीएसएम ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व हिंदी दिवस हिंदी की शक्ति, मिठास और सांस्कृतिक महत्त्व को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने का अवसर है।

इस अवसर पर सुश्री सान्वी काशीनाथ (मॉरीशस) की पुस्तक 'मधुर स्पर्श मेरी भावनाओं का', डॉ. दीप्ति अग्रवाल (भारत) की पुस्तक 'कुली से कुलीन बनने का सफ़र', मंजु गोरे (भारत) की पुस्तक 'रंग-ए-ख्याल', बी. यदु (भारत) की पुस्तक 'हर मुश्किल आसान नहीं होता', डॉ. सलमा जमाल (भारत) की पुस्तक 'गुल्लू मेरा नाम', डॉ. अनीता नैन की पुस्तक 'संस्कृत भाषा एवं सम्प्रेषण' तथा डॉ. भावना पराजुली (भारत) की पुस्तक 'उपहार' का लोकार्पण किया गया।

आई.सी.सी.आर. के कलाकारों ने 'गंगा अवतरण' नामक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की। इस सत्र का संचालन डॉ. हिंग्लाज दान रत्नू ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ शुभंकर मिश्र ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय का 18वाँ स्थापना दिवस

11 फ़रवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस, सूरीनाम हिंदी परिषद्, सूरीनाम, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैम्ब्रिज, इंग्लैंड, नीदरलैंड हिंदी संगठन, नीदरलैंड, संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बद्रीनारायण सिंह ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस, भारत और स्वर्ण गंगा, तंज़ानिया के सहयोग से अपने आधिकारिक कार्यारंभ की 18वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'हिंदी काव्य का अध्यापन और अध्ययन' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

प्रथम सत्र सूरदास के काव्यों पर आधारित था, जिसमें महात्मा गांधी सेकेंडेरी स्कूल, मोका के

छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा गायन एवं नृत्य के माध्यम से 'उद्धव गोपी संवाद' प्रस्तुत किया गया। मणिलाल डॉक्टर स्टेट सेकेंडेरी स्कूल द्वारा 'विनय और भक्ति' तथा लेडी सुशील रामगुलाम स्टेट सेकेंडेरी स्कूल द्वारा 'गोकुल लीला' की प्रस्तुति हुई।

बिक्रमसिंह रामलाला स्टेट सेकेंडेरी स्कूल, मॉरीशस की हिंदी अध्यापिका श्रीमती चंद्रावती भोला ने 'मॉरीशस में सूरदास के पदों का अध्यापन और अध्ययन' विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि मॉरीशस जैसे बहुभाषी देश में सूरदास के काव्य का शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसलिए कठिन शब्दों और भावों को सरल बनाया जाता है, ताकि विद्यार्थी विषयवस्तु को अच्छी तरह समझ सकें।

'स्वर्ण-गंगा' तंज़ानिया के अध्यक्ष श्री देवेंद्र नाथ पाठक ने बताया कि तंज़ानिया में कक्षा 11 में सूरदास के 'भ्रमर गीत' के चार पद पढ़ाए जाते हैं, जिनमें कृष्ण और सुदामा के खेल, गोपियों की

भक्ति और कृष्ण के न लौटने पर गोपियों का विरह शामिल है। सूरदास के पदों के अध्ययन से छात्रों में हिंदी साहित्य और भक्ति परंपरा की समझ बढ़ती है।

भारत के 'संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बदरीनारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस' की अध्यक्षा डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने बताया कि उनके विद्यालयों में छोटी कक्षाओं में छात्रों को कहानियों और लोककथाओं के माध्यम से कृष्ण भक्ति से जोड़ा जाता है, जबकि बड़ी कक्षाओं के छात्रों को सूरदास के काव्य में दर्शन और आलंकारिक विशेषताओं से परिचित कराया जाता है। चित्र, स्मार्ट बोर्ड, टीवी, नाट्य-मंचन, गीत, नृत्य आदि के माध्यम से शिक्षण को रोचक और जीवंत बनाया जाता है।

द्वितीय सत्र 'निराला, महादेवी वर्मा और पंत के काव्यों का अध्यापन-अध्ययन' विषय पर आधारित था, जिसमें राजकुमार गजाधर स्टेट सेकेंडरी स्कूल के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा 'बादल राग' और 'जागो फिर एक बार', डी.ए.वी. कॉलिज मॉर्सेलमाँ सेंट आँद्रे के छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा 'धीरे-धीरे उतर क्षितिज से' और 'जीवन विरह का जलजात' तथा गायताँ रेनाल स्टेट कॉलिज के शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा 'भारत माता' और 'द्रुत झरो' कविताओं की प्रस्तुति गायन एवं नृत्य के माध्यम से हुई।

टेयर-रूज़ स्टेट सेकेंडरी स्कूल, मॉरीशस की हिंदी अध्यापिका, श्रीमती रूमा देवी बसगीत ने बताया कि सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविताएँ समझाने के लिए 'सेतु-पाठ्यक्रम' के माध्यम से 1857–1947 की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं व व्यक्तित्वों से छात्रों को परिचित कराया जाता है। प्रकृति, नारी-व्यथा और भारत की सामाजिक विसंगतियों का विश्लेषण किया जाता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड के एसोसिएट प्रोफ़ेसर, डॉ. ऐश्वर्ज कुमार ने कहा कि उनके विश्वविद्यालय में छात्रों को निराला, महादेवी वर्मा और पंत की कविताओं की भाषा, रस, अलंकार और सांस्कृतिक संदर्भ को समझने में कठिनाई होती है। कविता को पढ़ाते समय उसकी भावनात्मक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी समझाना ज़रूरी है।

नीदरलैंड हिंदी संगठन की अध्यक्षा और सूरीनाम हिंदी परिषद् की वैश्विक समन्वयक, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडेय ने कहा कि सूरीनाम में हिंदी, डच और सरनामी तीनों भाषाओं का सेतु बनाकर छात्रों को निराला, पंत और महादेवी की कविताएँ पढ़ाई जाती हैं।

जवाहरलाल नेहरू सरकारी स्नातक महाविद्यालय, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान (भारत) के हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी ने दोनों सत्रों की अध्यक्षता करते हुए सूरदास और छायावादी कवियों के काव्यों की विशेषताएँ अंकित की और यह विचार रखा कि कविता केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि साहित्यिक सौंदर्य, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों की संवाहिका होती है।

समापन-समारोह

'संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बदरीनारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस' के छात्रों द्वारा हिंदी साहित्य के चार प्रमुख कवियों - सूरदास, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं तथा उनसे संबंधित चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई थी। समापन-समारोह के आरम्भ में मुख्य अतिथि माननीय डॉ. महेंद गंगापरसाद, पीडीएसएम, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री एवं विशिष्ट अतिथि भारतीय उपउच्चायुक्त, श्रीमती अपर्णा गणेसन ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर सचिवालय ने 'हिंदी मेरा अभिमान' विषय पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया था, जिसके विजेताओं के नामों की घोषणा की गई और उनके वीडियो प्रस्तुत किए गए।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने समापन-समारोह में यह विश्वास व्यक्त किया कि ऐसे साहित्यिक आयोजनों से विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम और रुचि का विकास होगा।

महात्मा गांधी संस्थान के संस्कृत विभाग की अध्यक्षा डॉ. कीर्ति देवी रामजतन द्वारा रचित गीत 'काव्य वाणी को नमन हमारा' को हिंदुस्तानी गायन के वरिष्ठ व्याख्याता, श्री सुतीक्ष्ण शर्मा मंगरू द्वारा स्वरबद्ध करके प्रस्तुत किया गया। यशवंत ज़ुरन ने गायन में और यशीराज सन्मुखिया ने कीबोर्ड पर उनका साथ दिया।

भारतीय उपउच्चायुक्त, श्रीमती अपर्णा गणेसन ने विश्व हिंदी सचिवालय के 18वें स्थापना दिवस के अवसर पर सचिवालय की उपलब्धियों की सराहना की और आशा व्यक्त की कि ऐसे साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रयास हिंदी की वैश्विक यात्रा को अधिक समृद्ध बनाएँगे।

शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. महेंद गंगापरसाद, पीडीएसएम ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी को समाज में फैलाना हम सबकी ज़िम्मेदारी है। उन्होंने छात्रों से अपील की कि वे हिंदी के एंबेसडर बनें और अपने अनुभवों से दूसरों को प्रेरित करें।

इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय की वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य', डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी की पुस्तक 'अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में हिंदी भाषा और साहित्य', डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडेय द्वारा रचित 'ट्यूलिपो की धरती' व 'पंचतंत्र की श्रेष्ठ कहानियाँ' एवं डॉ. कल्पना लालजी कृत 'धूप-छाँव' का विमोचन हुआ तथा वक्ताओं को शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडेय और डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में लेखक-सम्मिलन

10 फ़रवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में लेखकों का सम्मिलन आयोजित किया गया, जिसके अंतर्गत भारत, इंग्लैंड, मॉरीशस और नीदरलैंड के प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों को एक-दूसरे से भेंट करने और अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने का अवसर मिला। सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी लेखकों का स्वागत किया।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश, भारत में संस्कार ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस और बदरीनारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस' की अध्यक्षा डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने 'शिव की महिमा' पर दोहे प्रस्तुत किए। सूरीनाम हिंदी परिषद् और नीदरलैंड हिंदी परिषद् की अध्यक्षा डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडेय ने कहानी 'परवरिश' पढ़कर सुनाई। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में आईसीसीआर के हिंदी पीठ, प्रो. राज शेखर ने व्यंग्य कविता 'कूपमंडूक' प्रस्तुत की और इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. ऐश्वर्ज कुमार ने नमिता गोखले के अंग्रेज़ी उपन्यास का हिंदी अनुवाद साझा किया।

ज्योति झा ने 'मोड़ से गुज़रते हुए' कहानी का वाचन किया। मॉरीशस से हिंदी स्कूल फ़ेडेरेशन के अध्यक्ष श्री प्रेमदीप चमन ने 'नमन करें हम उस माटी को, जिसकी हम संतान हैं' गीत का गायन किया और श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने 'धीरे-धीरे चल पथिक लंबा है रास्ता' कविता प्रस्तुत की। श्रीमती अंजु घरभरन ने 'दर्द नीले सागर का' कविता का पाठ किया, डॉ. शशी दुकन ने कहानी 'अहंकार' सुनाई तथा डॉ. कल्पना लालजी ने 'कलयुग के गुरुदेव - नेटवर्किंग' कविता प्रस्तुत की। हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस की ओर से श्री मोहरलाल जगेसर ने कहानी 'मानव मूल्य की पहचान और परोपकार' सुनाई और श्रीमती बीना रामफल ने 'कंधा नसीब न हुआ' कहानी प्रस्तुत की।

मॉरीशस के नवोदित साहित्यकारों में डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने 'दूसरे के नुकसान में अपना भी लाभ नहीं' लघुकथा प्रस्तुत की। सुश्री आशा जानू ने 'आज नहीं तो कल', श्रीमती अंजलि हजगैबी बिहारी ने 'आपकी दुआ अभी तक बेरंग', सुश्री मोधीनी ने 'माँ का आँचल' और सुश्री लेखांक्षा ने 'हिंदी भाषा' स्वरचित कविताओं का क्रमिक रूप से वाचन किया।

अंत में, जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान, भारत के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त अध्यक्ष डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी ने लेखकों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने 'बेटियाँ' और 'गाँव से परदेश' कविताएँ प्रस्तुत कीं।

समापन में डॉ. शुभंकर मिश्र, उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व नाटक दिवस 2026

विश्व नाटक दिवस के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसका पुरस्कार-वितरण-समारोह 25 मार्च, 2026 को सचिवालय के सभागार में संपन्न हुआ।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता में पाँच भौगोलिक क्षेत्रों (अफ़्रीका व मध्य पूर्व, अमेरिका, एशिया व ऑस्ट्रेलिया, यूरोप तथा भारत) से 16 से 25 आयु वर्ग के युवाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर विजेताओं के नामों की घोषणा की गई।

अफ़्रीका व मध्य पूर्व क्षेत्र से महात्मा गांधी सेकेंडरी स्कूल, नुवेल फ़्राँस को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'नए युग में हिंदी भाषा' विषय पर मॉरीशस में प्रथम स्थान पर आए नाटक का वीडियो प्रस्तुत किया गया। इस नाटक का निर्देशन एमजीएसएस, नुवेल फ़्राँस की हिंदी अध्यापिका श्रीमती खुशबू चुरामन ने किया और ऋषिका देवी बोनोमाली, सिमरन सिंह, आथेना आपोलो, नींव तेजस झोरी, युतिष्ठा सुबोचन, तीषा ओखाजा, इशिका रुचाया, आदित्य कोकिल और निवेदना सिबालक ने कलाकार के रूप में नाटक में भाग लिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने कहा कि नाट्य-कला सभी कलाओं में विशेष महत्त्व रखती है और नाटकों के संवाद हिंदी भाषा को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। इसीलिए विश्व हिंदी सचिवालय 'रंगमंच और अभिनय' पर कार्यशालाएँ तथा नाटक-प्रतियोगिता व नाटक-मंचन के कार्यक्रमों का निरंतर आयोजन करता रहता है।

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) सुश्री श्रुति पाठक ने युवाओं और बच्चों के व्यक्तित्व एवं संवाद-कौशल के विकास में नाटक की भूमिका पर बात की और प्रतियोगिता के सभी विजेताओं को बधाई दी।

कार्यक्रम के समापन में अनंत नवरंग आर्ट्स एसोसिएशन के कलाकारों ने 'नई रोशनी' नाटक का सफल मंचन किया। इस नाटक की रचना श्री अनिल दान्हू ने की। उनके निर्देशन में श्रीमती सांता सुकन, श्री नारायणदत्त सितोहल, श्री दिलीपराज बंग्शी, श्री होमदत्त फली, श्री चंद्राणी गोपोल तथा श्री कोर्शविन युज दान्हू ने नाटक प्रस्तुत करके दर्शकों का मन मोह लिया।

विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2026 : विश्व भर

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार ने विश्व हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता राज्य मंत्री श्री कीर्ति वर्धन सिंह ने की। भारत में तैनात विदेशी मिशनों के राजदूतों और अन्य राजनयिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिससे भारत की सांस्कृतिक और कूटनीतिक पहुँच को बढ़ावा देने में हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया।

साभार : युनाइटड न्यूज़ ऑफ़ इंडिया

गुरुग्राम में विश्व हिंदी दिवस पर हिंदी कार्यशाला, संगोष्ठी और कवि-सम्मेलन

ईएसआईसी उप-क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम ने 12 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी कार्यशाला, संगोष्ठी और कवि सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम में नई दिल्ली, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा और कार्यालय अध्यक्ष श्री सुनील यादव उपस्थित थे। विश्व हिंदी दिवस का विषय था 'हिंदी : पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक'। कार्यालय प्रमुख द्वारा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा गया, जिसमें हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और आधुनिक उपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया।

दोपहर में हिंदी की साहित्यिक और सांगीतिक विविधता का जीवंत प्रदर्शन हुआ। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आयोजित प्रतियोगिताओं में अंतर-शाखा कार्यालयी राजभाषा चल-शील्ड योजना के अंतर्गत प्रशासन शाखा को शील्ड और प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। श्री सचिन सिंह, उपनिदेशक को हिंदी डिक्टेशन योजना 2024-25 के तहत प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर अनुवाद अधिकारी श्री बिरजू सिंह, सहायक निदेशक डॉ. स्वीटी यादव सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

साभार : श्रम और रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार की विज्ञप्ति

बंगाल

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10 जनवरी को विश्व हिंदी परिषद्, पश्चिम बंगाल इकाई द्वारा एक आभासी विचार-गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारत के विभिन्न प्रदेशों सहित विदेश से भी हिंदी प्रेमियों की सक्रिय सहभागिता रही। लगभग 90 प्रतिभागियों ने इस आयोजन में भाग लिया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि शैक्षिक प्रकोष्ठ बिहार की अध्यक्ष डॉ. शिप्रा मिश्रा रहीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में काजी नज़रुल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के हिंदी विभाग के डॉ. विजय कुमार भारती उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्व भारती विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डॉ. रामेश्वर मिश्र ने की। मंच-संचालन पश्चिम बंगाल इकाई के शैक्षणिक प्रकोष्ठ की उपाध्यक्ष प्रणति ठाकुर ने किया।

इस विचार-गोष्ठी का विषय था "डिजिटलीकरण का हिंदी पर प्रभाव"। विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार रखते हुए कहा कि डिजिटल माध्यमों के कारण हिंदी को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिली है।

मुख्य अतिथि डॉ. शिप्रा मिश्रा ने कहा कि वैश्विक स्तर पर हिंदी का विकास हुआ है, किंतु पारंपरिक हिंदी धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है।

यह विचार-गोष्ठी विश्व हिंदी परिषद् के महासचिव डॉ. विपिन कुमार के संरक्षण में सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

स्वेता गुप्ता "स्वेताम्बरी", अध्यक्ष शैक्षणिक प्रकोष्ठ विश्व हिंदी परिषद् पश्चिम बंगाल

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस

भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2026 के अवसर पर 'मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार में शैक्षणिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का योगदान' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मॉरीशस गणराज्य के स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्री माननीय श्री अनिल कुमार बेचू मुख्य अतिथि रहे और उन्होंने उक्त विषय पर सारगर्भित वक्तव्य दिया।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारतीय उच्चायोग द्वारा हाल में किए गए विभिन्न कार्यों का उल्लेख किया, जिनमें सभी आयु वर्ग के लिए हिंदी कक्षाएँ आरम्भ किया जाना भी शामिल है।

इस अवसर पर हिंदी काव्य-गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस की विभिन्न संस्थाओं ने भाग लिया।

मीराबाई के भजन 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई' पर कथक शास्त्रीय नृत्य का मंचन किया गया। कार्यक्रम का एक आकर्षण भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'गंगा अवतरण' भी रहा।

इस अवसर पर मॉरीशस के पूर्व उपराष्ट्रपति महामहिम श्री राऊफ़ बंधन की पुस्तक के हिंदी रूपांतर 'तकदीर' तथा विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र द्वारा लिखित दो पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

साभार : भारतीय उच्चायोग मॉरीशस का फ़ेसबुक पेज

सूरीनाम

9 जनवरी, 2026 को स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र और सूरीनाम हिंदी परिषद् ने संयुक्त रूप से विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम आयोजित किया। उसी दिन क्रिस रामखेलावन एवं साथी फ़ाउंडेशन के सहयोग से प्रवासी भारतीय दिवस भी मनाया गया। कार्यक्रम का पहला भाग हिंदी दिवस 2026 को समर्पित था। सूरीनाम में भारत के राजदूत के उद्बोधन के बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री डी. शरमन ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। तत्पश्चात् सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री सत्यानंद परमसुख ने 'विश्व हिंदी दिवस और सूरीनाम में हिंदी का महत्त्व' विषय पर अपना भाषण प्रस्तुत किया।

इसके बाद उन व्यक्तियों को श्रद्धांजलि दी गई, जिनका पिछले वर्ष निधन हो गया और जिन्होंने सूरीनाम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्रीमती एल. लालाराम-हरद्वारसिंह ने अपने द्वारा लिखित गीत 'हिंदी पढ़ोगे' प्रस्तुत किया, जिसमें उनके साथ दीप महाबीर और डेलिशा महाबीर

ने सहभागिता की। इसी अवसर पर इस गीत का वीडियो क्लिप भी आधिकारिक रूप से जारी किया गया। संगीत संयोजन महिंदर मेघो द्वारा किया गया।

इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा की गई और कविता-पाठ हुआ। कार्यक्रम का समापन प्रश्नोत्तर खेल के साथ हुआ।

कार्यक्रम का दूसरा भाग, जो प्रवासी भारतीय दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था, भारत के राजदूत के संदेश के साथ प्रारंभ हुआ। इसके बाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राष्ट्रीय सभा के अध्यक्ष श्री ए. अधिन ने अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

त्रिनिदाद एवं टोबेगो

भारतीय उच्चायोग ने 10 जनवरी, 2026 को त्रिनिदाद और टोबेगो में भारतीय प्रवासी समुदाय और हिंदी प्रेमियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ विश्व हिंदी दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय उच्चायुक्त डॉ. प्रदीप राजपुरोहित, संस्कृति एवं सामुदायिक विकास मंत्रालय के संसदीय सचिव डॉ. नरेंद्र रूपनाराइन, नेशनल काउंसिल ऑफ़ इंडियन कल्चर के अध्यक्ष तथा हिंदी फ़ाउंडेशन ऑफ़ त्रिनिदाद एवं टोबेगो के उपाध्यक्ष श्री सूरजदेव मंगरू, वैदिक मिशन ऑफ़ टी एंड टी की अध्यक्ष एवं पूर्व हिंदी छात्रवृत्ति धारक सुश्री रत्ना कंगल द्वारा दीप-प्रज्वलन के साथ हुई। वक्ताओं ने विशेष रूप से प्रवासी समुदाय के लिए हिंदी के महत्त्व पर अपने विचारपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किए। इसके पश्चात् विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए, हिंदी कविताओं का पाठ हुआ तथा महात्मा गांधी सांस्कृतिक सहयोग संस्थान के शिक्षकों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। कार्यक्रम का संचालन उच्चायोग में हिंदी और संस्कृत की शिक्षिका सुश्री शारदा महाराज ने किया।

साभार : हिंदी फ़ाउंडेशन का फ़ेसबुक पेज

नीदरलैंड

नीदरलैंड में 10 जनवरी को कई संस्थाओं द्वारा विश्व हिंदी दिवस के ऑनलाइन व ऑफ़लाइन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। देनहॉग में स्थित भारतीय दूतावास के सांस्कृतिक केन्द्र 'गांधी सेंटर' में हिंदी गीत व हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सूरीनाम के प्रवासी भारतीयों, शिक्षकों व विद्यार्थियों ने भी हिंदी कविताएँ एवं कहानियाँ सुनाईं।

भारतीय दूतावास के राजदूत ने अपने संबोधन में कहा कि नीदरलैंड में सूरीनामी प्रवासी भारतीयों ने आज 152 वर्ष बाद भी बिना किसी सुविधा के हिंदी भाषा को सम्मान के साथ संजोए रखा। दूतावास का प्रयास होगा कि नीदरलैंड में हिंदी भाषा व शिक्षण के लिए और ज़्यादा सुविधाएँ प्राप्त हों, जैसे हिंदी भाषा की पुस्तकें, नियमित पाठ्यक्रम व अन्य सामग्री उपलब्ध हो सकें।

इस अवसर पर नीदरलैंड के शहर लिवर्डेन में स्थित सामूहिक भवन महात्मा गांधी केन्द्र में भी अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड, सामाजिक संस्था 'Stichting मैत्री Vriendschap Voor Iedereen' व अवि इंटरनेशल संस्था व भारत संस्था द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। प्रवासी व सूरीनामी प्रवासी भारतीयों के बच्चों के लिए एक चित्रकला कार्यशाला हुई तथा भारतीय साहित्यकारों की कविताओं का पाठ किया गया।

डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे की रिपोर्ट

फ़िजी

10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भारतीय उच्चायोग एवं स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, सुवा में हिंदी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के उच्चायुक्त श्री सुनीत मेहता ने हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु की जा रही गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फ़िजी गणराज्य सरकार के माननीय श्री अग्निदेव सिंह, रोज़गार, उत्पादकता एवं कार्यस्थल संबंध मंत्री तथा पूर्व शिक्षक एवं फ़िजी टीचर्स यूनियन के पूर्व महासचिव ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी जड़ों और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ने का माध्यम है तथा भारत-फ़िजी संबंधों को सशक्त बनाती है। इस अवसर पर काव्य-पाठ किया गया तथा हिंदी निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री परमेंद्र भान ने किया और समापन श्री ईश्वर सिंह यादव के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

साभार : सुश्री सुएता दत्त चौधरी का फ़ेसबुक पेज

रेक्ज़ाविक, आइसलैंड

12 जनवरी, 2026 को भारतीय दूतावास, रेक्ज़ाविक, आईसलैंड द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम दूतावास के अधिकारियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर हिंदी निबंध-लेखन एवं कविता-लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न आयु वर्ग के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रतिभागियों ने हिंदी भाषा के प्रति अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों को हिंदी के अध्ययन और उसके प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया।

साभार : भारतीय दूतावास, रेक्ज़ाविक सोशल मीडिया और आधिकारिक सूचना / indoeuropean.eu

लीलोंग्वे, मलावी

भारतीय उच्चायोग, लीलोंग्वे द्वारा डीएमआई-बापिस्ट विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारतीय उच्चायुक्त महामहिम अमराराम गुर्जर ने अपने संबोधन में हिंदी को वैश्विक सहयोग का सेतु बताया तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की बढ़ती उपस्थिति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डीएमआई-बापिस्ट विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो. अमलराज एम्ब्रोज ने भारत-मलावी शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सहयोग,

आईटीईसी एवं आईसीसीआर की छात्रवृत्तियों तथा शैक्षणिक आदान-प्रदान के महत्त्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम में भारत-मलावी मैत्री को सुदृढ़ करने की भावना को उजागर किया गया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लीलोंग्वे, मलावी की वेबसाइट

कुआलालंपुर, मलेशिया

कुआलालंपुर के नेताजी सुभाष चंद्र बोस इंडियन कल्चरल सेंटर में विभिन्न संगठनों एवं विद्यालयों के सहयोग से 10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस का कार्यक्रम हुआ। मलेशिया में भारत के उपउच्चायुक्त श्री हितेश राजपाल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इंटरनेशनल स्कूलों के छात्रों के लिए आयोजित क्विज़ प्रतियोगिता से कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसमें सीनियर एवं जूनियर वर्ग के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त कवि-गोष्ठी, सिनेमा के प्रसिद्ध दृश्यों के मंचन तथा हिंदी गीतों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम को सांस्कृतिक रंग प्रदान किया। इस कार्यक्रम में 160 से अधिक छात्रों, शिक्षकों एवं समुदाय के सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही।

साभार : भारतीय उच्चायोग, कुआलालंपुर, मलेशिया की वेबसाइट

अंतानानारिवो

अंतानानारिवो स्थित भारतीय दूतावास द्वारा 12 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। प्रभारी राजदूत श्री किरण चंदर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी को भारत की भावनाओं का माध्यम बताया। उन्होंने हिंदी के प्रति मलागासी नागरिकों के उत्साह पर गर्व व्यक्त किया और उन्हें हिंदी कक्षाओं से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर भारतीय नृत्य, संगीत, कविता-पाठ और हिंदी प्रदर्शनी हुई।

साभार : भारतीय दूतावास, मदागास्कर एवं यूनियन ऑफ़ कोमोरो की वेबसाइट

गयाना

गयाना में भारतीय उच्चायोग ने स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में प्रवासी भारतीय दिवस और विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सात प्रतिष्ठित इंडो-गयानीज़ व्यक्तियों को सम्मानित किया। सम्मानित व्यक्तियों में नियाज़ मोहम्मद सुभान, हेमराज किस्सून, ससेनारिन संकर, राजकुमारी सिंह, सुरेश सिंह, रोशिनी खुशी बुधु और डॉ. कुमार सुखराज शामिल थे। इन्होंने अपने योगदान से भारत-गयाना मित्रता को सशक्त किया। इस अवसर पर उच्चायुक्त डॉ. अमित तेलंग ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा तथा हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर ज़ोर दिया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, जॉर्जटाउन की वेबसाइट

बिश्केक

भारतीय दूतावास, बिश्केक में 10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में किर्गिज़ नेशनल यूनिवर्सिटी, अंतरराष्ट्रीय संबंध और ओरिएंटल स्टडीज़ के प्रोफ़ेसर श्री एवगेनी कब्लुकोव उपस्थित हुए। समारोह का संयुक्त उद्घाटन श्री कब्लुकोव, डॉ. प्रेम कुमार और राजदूत श्री बीरेन्द्र सिंह यादव ने किया। राजदूत ने सभा को संबोधित किया और श्री कब्लुकोव और डॉ. प्रेम कुमार ने भी अपने विचार साझा किए। दूतावास द्वारा आयोजित हिंदी निबंध और कविता लेखन प्रतियोगिताओं के कुछ विजेताओं ने अपनी कविताएँ और निबंध प्रस्तुत किए। आईएचएसएम विश्वविद्यालय और आईएमयू विश्वविद्यालय के संगीत समूह ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी और हिंदी कक्षा के छात्रों ने बॉलीवुड गीत प्रस्तुत किए। 15 सितंबर, 2025 से दूतावास के आयुष हॉल में भारतीय संस्कृति शिक्षक (टीआईसी) द्वारा संचालित हिंदी कक्षाओं के किर्गिज़ छात्रों ने मुफ़्त हिंदी कक्षाओं के आयोजन के लिए दूतावास को धन्यवाद किया।

साभार : भारतीय दूतावास, बिश्केक की वेबसाइट

बोगोटा, कोलंबिया

बोगोटा स्थित भारतीय दूतावास ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक इंटरैक्टिव हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें कोलंबियाई प्रतिभागियों को हिंदी में बुनियादी शब्दावली और सरल संवाद-कौशल का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिभागियों की उत्साही प्रतिक्रिया ने भारत-कोलंबिया के संबंधों की मज़बूती को उजागर किया।

साभार : भारतीय दूतावास, बोगोटा, कोलंबिया की वेबसाइट

घाना

घाना में भारत के उच्चायोग ने गर्व के साथ विश्व हिंदी दिवस 2026 मनाया, जिसमें हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में प्रसारित करने की भारत की प्रतिबद्धता दोहरायी गयी। इस अवसर पर हिंदी कविता-पाठ का आयोजन किया गया और हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। उच्चायुक्त श्री मनीष गुप्ता ने भारत की शाश्वत सभ्यतागत विरासत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी भारत के मूल्यों, संस्कृति और सॉफ़्ट पावर को विश्व भर में पहुँचाती है। उन्होंने विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगे शिक्षकों, छात्रों और भारतीय समुदाय के प्रयासों की सराहना की।

साभार : भारतीय उच्चायोग, आक्रा, घाना की वेबसाइट

जिबूती

जिबूती में भारतीय दूतावास के बहुदेशीय भवन में 10 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। समारोह में विदेश मंत्री की पूर्व केंद्रीय सचिव और वर्तमान में अफ़्रीकन पीयर रिव्यू मैकेनिज़्म (MAEP) में राष्ट्रीय सचिव, श्रीमती अमीना अहमद योजनस उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के राजदूत, श्री एम. कीवोम के स्वागत-भाषण और 'वंदे मातरम' के गायन के साथ हुई। राजदूत ने जिबूती में हिंदी सहित विभिन्न भाषाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय सचिव श्रीमती योजनस ने हिंदी फ़िल्मों एवं गानों में जिबूती के नागरिकों की रुचि पर बात की। विभिन्न गतिविधियों के साथ समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

साभार : भारतीय दूतावास, जिबूती की वेबसाइट

जर्मनी

जर्मनी के प्रतिष्ठित हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में 17 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक विचारोत्तेजक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध कार्यक्रम हैम्बर्ग स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास और हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के भारतीय एवं तिब्बती संस्कृति और इतिहास विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत-विभाग की अध्यक्षा प्रो. डॉ. एफ़ा विल्देन एवं संस्कृत के प्रोफ़ेसर हारुनागा आइजैक्सन के स्वागत-भाषणों से हुआ। भारत के महावाणिज्य दूतावास, हैम्बर्ग के कौंसल श्री जॉयदीप रॉय ने उद्घाटन-भाषण दिया।

मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत, पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखंड और साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने 'लेखक गाँव' थानों, देहरादून, उत्तराखंड की स्थापना के उद्देश्यों पर विस्तार से बताया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक प्रो. डॉ. दिनेश प्रसाद सकलानी ने परिषद् के इतिहास, उसकी कार्य-प्रणाली एवं हिंदी-शिक्षण-प्रशिक्षण के उद्देश्यों पर बात की। कोलंबिया विश्वविद्यालय, अमेरिका के डॉ. राकेश रंजन ने हिंदी भाषा के विस्तार और चुनौतियों पर महत्त्वपूर्ण विचार रखे।

हिंदी लेखक स्व. विनोद कुमार शुक्ल (1937–2025) के जीवन एवं उनके कृतित्व पर संक्षेप में विचार किया गया और उनकी कविता 'मृत्यु के बाद' का हिंदी में सस्वर पाठ किया गया तथा उसके अंग्रेज़ी एवं जर्मन अनुवाद प्रस्तुत किए गए।

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने हिंदी कविताओं का पाठ कर उपस्थित अतिथियों को मंत्रमुग्ध किया।

कार्यक्रम के अंत में साई भवानी गरीकिना ने आधुनिक एवं प्राच्य भारतीय नृत्य का मिश्रित रूप तथा अर्चा संतोष ने प्राच्य भारतीय नृत्य मनमोहक ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल एवं रचनात्मक संचालन हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के डॉ. राम प्रसाद भट्ट ने किया।

हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, हैम्बर्ग, जर्मनी से डॉ. राम प्रसाद भट्ट की रिपोर्ट

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, पुस्तक मेला, संवाद, उत्सव

ब्रिस्बेन में प्रथम प्रशांत क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

16 जनवरी, 2026 को भारतीय उच्चायोग, कैनबरा और भारत के कौंसुलावास, ब्रिस्बेन द्वारा ब्रिस्बेन में पहली बार 'प्रशांत क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इसमें भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के सचिव (दक्षिण), ऑस्ट्रेलिया में भारत के उच्चायुक्त तथा ब्रिस्बेन में भारत के कौंसल जनरल उपस्थित रहे। कार्यक्रम में ऑस्ट्रेलिया के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ फ़िजी, न्यूज़ीलैंड और प्रशांत द्वीप देशों के विद्वानों, साहित्यकारों, शिक्षकों और प्रतिनिधियों की सहभागिता हुई। सम्मेलन के दौरान हिंदी-प्रशांत क्षेत्र में हिंदी के सुदृढ़ीकरण की दिशा में संस्थाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों, हिंदी पाठ्यक्रम की संरचना, हिंदी शिक्षण की पद्धति और मूल्यांकन-मॉडल, हिंदी के प्रचार में मीडिया, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका तथा भारत, फ़िजी, न्यूज़ीलैंड और प्रशांत क्षेत्र के प्रतिनिधियों द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए व्यावहारिक सुझावों पर विमर्श हुआ। हिंदी विद्वान डॉ. पीटर फ़्रीडलैंडर सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ।

साभार : भारतीय उच्चायोग, कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया की वेबसाइट

काहिरा में अफ़्रीका क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

8-9 फ़रवरी, 2026 को काहिरा स्थित भारतीय दूतावास एवं ऐन शम्स विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में काहिरा में 'गंगा से नील तक सांस्कृतिक संपर्क एवं सहयोग में हिंदी की भूमिका' विषय पर अफ़्रीका क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस द्विदिवसीय सम्मेलन में केन्या, ज़िमबाब्वे, नामीबिया, तंज़ानिया, मॉरीशस, नाइजीरिया और दक्षिण अफ़्रीका सहित सात अफ़्रीकी देशों से आए हिंदी विद्वानों, प्राध्यापकों, शिक्षाविदों, लेखकों एवं हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। साथ ही काहिरा विश्वविद्यालय तथा अल-अज़हर विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों की सक्रिय सहभागिता रही। सम्मेलन में 'वसुधैव कुटुंबकम् - समस्त विश्व एक परिवार है' की भावना के अनुरूप साझा सांस्कृतिक संबंधों का उत्सव मनाया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन मिस्र में भारत के राजदूत श्री सुरेश के. रेड्डी, विदेश मंत्रालय, भारत की सचिव, सुश्री नीना मल्होत्रा तथा ऐन शम्स विश्वविद्यालय की उपाध्यक्ष, प्रो. रामी मेहर घाली की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ।

शैक्षणिक सत्रों में 'सांस्कृतिक संपर्क में हिंदी की भूमिका', 'अंतरराष्ट्रीय संबंधों में हिंदी का महत्त्व', 'सांस्कृतिक कूटनीति के एक प्रभावी माध्यम के रूप में हिंदी', 'भारतीय सिनेमा का वैश्विक प्रभाव' तथा 'प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी की संभावनाएँ' आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया गया।

साभार : भारतीय दूतावास, कैरो, मिस्र की वेबसाइट

बुकारेस्ट में क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

भारतीय दूतावास, बुकारेस्ट ने रोमानियन अमेरिकन यूनिवर्सिटी (RAU) के सहयोग से 28-29 जनवरी, 2026 को क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया। इस दो दिवसीय सम्मेलन में यूरोप, मध्य एशिया, अमेरिका और भारत के प्रमुख हिंदी विद्वानों और संस्थागत प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन रोमानियाई अमेरिकी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. डॉ. कोस्टेल नेग्रिसिया द्वारा स्वागत-भाषण के साथ हुआ। इसके पश्चात् भारत के रोमानिया और मोल्दोवा में समकक्ष राजदूत, महामहिम डॉ. मनोज कुमार महापात्र ने विशेष संदेश दिया। विदेश मंत्रालय, भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए सुश्री अंजू रंजन, संयुक्त सचिव ने प्रतिभागियों के साथ संवाद

किया और सम्मेलन में व्यक्त किए गए यूरोपीय अनुभवों पर अपने विचार दिए।

सम्मेलन में जर्मनी, स्वीडन, नीदरलैंड, डेनमार्क, यूनाइटेड किंगडम, हंगरी, बेल्जियम, पोलैंड, सर्बिया, तुर्की, आर्मेनिया, मोल्दोवा, कज़ाकिस्तान, अमेरिका, रोमानिया और भारत के हिंदी विद्वानों ने दो दिवसीय कार्यक्रम में विविध भाषाई परिवेश में हिंदी शिक्षा के भविष्य पर गहन चर्चा की। सम्मेलन ने प्रशिक्षित हिंदी शिक्षकों की संख्या बढ़ाने और डिजिटल तकनीक सहित एआई के उपयोग के माध्यम से हिंदी शिक्षा को सशक्त बनाने पर ज़ोर दिया।

प्रतिभागियों ने विश्वविद्यालयों में हिंदी विभागों के कार्य को सुदृढ़ बनाने के लिए संस्थागत सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। सम्मेलन ने अंतरविषयक अकादमिक सहभागिता को बढ़ावा देने और वैश्विक शिक्षा नेटवर्क में हिंदी की उपस्थिति बढ़ाने पर बल दिया।

साभार : भारतीय दूतावास, बुकारेस्ट की वेबसाइट

नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन 2026

नई दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में 9 से 11 जनवरी, 2026 तक तीसरा अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वैश्विक हिंदी परिवार और दिल्ली विश्वविद्यालय के 'भारतीय भाषाएँ एवं साहित्यिक अध्ययन विभाग' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया।

भारत के उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन-सत्र का नेतृत्व किया। लोकसभा के अध्यक्ष ओम बिरला ने वेलिडिक्टरी सत्र में कहा कि भारतीय भाषाओं को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करना आवश्यक है, क्योंकि यह हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है।

सम्मेलन के तीन दिनों में लगभग 40 सत्र आयोजित किए गए, जिनमें हिंदी के विद्वान, लेखक एवं भाषाशास्त्री उपस्थित थे।

IGNCA के अध्यक्ष और पद्मभूषण पुरस्कार से सम्मानित राम बहादुर राय ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। जापानी भाषाविद् तोमियो मिज़ोकामी और इन्टरनेशनल सहयोग परिषद् के सचिव श्याम परांडे विशेष अतिथि रहे।

लोकसभा अध्यक्ष ने कहा, यदि हम वैश्विक मंच पर अपनी भाषाओं में संवाद नहीं करेंगे, तो हमारी भाषाएँ कैसे चमकेंगी? "संसद में भी सांसद अपनी भाषाओं में बोलकर भारतीय भाषाओं का प्रचार कर रहे हैं।"

यह सम्मेलन हिंदी और भारतीय भाषाओं को वैश्विक मंच पर स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम रहा।

साभार : कला मंत्रालय, भारत सरकार की विज्ञप्ति

भारत-श्रीलंका हिंदी सम्मेलन 2026

कोलंबो स्थित स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र ने 13 जनवरी, 2026 को 'दूसरा भारत-श्रीलंका हिंदी सम्मेलन' का आयोजन किया, जिसमें भारत एवं श्रीलंका के चार सौ से अधिक हिंदी विद्वानों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के उच्चायुक्त संतोष झा द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्रीलंका के शिक्षा एवं उच्च शिक्षा मंत्रालय के उपमंत्री डॉ. मधुरा सेनेविरत्न भी उपस्थित थे। उद्घाटन-संबोधन में महामहिम उच्चायुक्त ने बताया कि स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र छात्रवृत्तियों एवं प्रशिक्षण-कार्यक्रमों के माध्यम से श्रीलंका में हिंदी-शिक्षण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है। सम्मेलन में 'हिंदी-शिक्षण', 'साहित्य-अध्ययन', 'अनुवाद' और 'वैश्विक हिंदी' पर अकादमिक सत्र हुए। अंत में, श्रीलंका के वरिष्ठ विद्वानों को उनकी हिंदी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

साभार : न्यूज़ ऑन एयर की वेबसाइट

इंदौर में संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 2026

इंदौर के देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय में 20 जनवरी, 2026 को भारत सरकार के राजभाषा विभाग के नेतृत्व में 'मध्य, पश्चिम एवं दक्षिण क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित किया गया।

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार ने उद्घाटन-सत्र में कहा - "भाषा बाधा न बने, सेतु बने।"

सम्मेलन में केंद्रीय कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को 80 से अधिक पुरस्कार और नराकास राजभाषा सम्मान प्रदान किए गए। पुरस्कार विजेताओं का चयन सूचना प्रबंधन प्रणाली द्वारा प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर किया गया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार नर्मदा प्रसाद उपाध्याय और तेलुगु भाषी हिंदी विद्वान जे.एल. रेड्डी ने दक्षिण भारत में हिंदी के समृद्ध इतिहास और विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन में ई-ऑफ़िस, मानकीकृत शब्दावली और तकनीकी शब्दों के विकास पर चर्चा हुई। हिंदी शब्द सिंधु जैसे डिजिटल शब्दकोश और तकनीकी संसाधनों ने युवा शोधार्थियों और वैज्ञानिकों को अपनी भाषा में नवाचार और अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया।

इस अवसर पर, हैदराबाद हिंदी प्रचार सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, ट्राईफ़ेड, बावा और मृगनयनी ने स्टॉल लगाए।

साभार : मिलाप हमारा शहर की वेबसाइट

हिंदी सशक्तिकरण बैठक, कार्यशाला एवं संगोष्ठी

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश, शिमला द्वारा 17 फ़रवरी, 2026 को हिंदी सशक्तिकरण बैठक, कार्यशाला और संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे, जबकि ज़िला केंद्रों और अन्य कार्यालयों के अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। कार्यक्रम की शुरुआत कार्यालय हिंदी कार्यान्वयन समिति की बैठक से हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री अजय सिंग चैल, उपमहानिदेशक

एवं राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारी ने की। बैठक में कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की समीक्षा की गई।

बैठक के बाद हिंदी कार्यशाला में 'भाषा और संस्कृति का अटूट संबंध' विषय पर श्री पंकज ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। मोबाइल एप्प आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और परिणामस्वरूप प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान निर्धारित किए गए।

हिंदी कार्यशाला के बाद हिंदी संगोष्ठी हुई। इसके माध्यम से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग और राजभाषा नीति के प्रति जागरूकता बढ़ी।

साभार : राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश की विज्ञप्ति

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा आयोजित 'काव्य संगम'

26 फ़रवरी, 2026 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बिक्रमसिंह रामलाला इंटरप्रीटेशन केंद्र में हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा आप्रवासी घाट ट्रस्ट फ़ंड के सहयोग से 'काव्य संगम' का आयोजन किया गया। कवि-सम्मेलन में वरिष्ठ कवि, उभरते रचनाकार, विद्यार्थी तथा हिंदी प्रेमी सम्मिलित हुए। काव्य-पाठ के माध्यम से मातृभाषा, सांस्कृतिक जड़ें, पहचान, प्रवास और समकालीन सामाजिक यथार्थ जैसे विषयों पर भावपूर्ण अभिव्यक्ति हुई।

अपने संदेश में हिंदी स्पीकिंग यूनियन की अध्यक्षा, डॉ. अंजलि चिंतामणि ने हिंदी भाषा के संवर्धन में कविता को एक सशक्त साहित्यिक माध्यम बताया।

मुख्य अतिथि कला और संस्कृति मंत्री माननीय श्री महेंद्र गोंदिया, ओ.एस.के. ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'काव्य संगम' में भाग लेना उनके लिए अत्यंत गौरव की बात है। आप्रवासी घाट की ऐतिहासिक दीवारों के भीतर हिंदी में प्रस्तुत की गई प्रत्येक कविता पीढ़ियों के बीच एक सेतु जैसी प्रतीत हुई, जो हमारे पूर्वजों की आवाज़, उनके संघर्ष और उनके अटूट आत्मबल को आगे बढ़ा रही थी।

साभार : माननीय श्री महेंद्र गोंदिया का पोस्ट

भोपाल की फाग उत्सव संगोष्ठी में वैश्विक हिंदी परिवार का समागम

भोपाल स्थित दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय में स्टेट बैंक साहित्य कला परिषद् के सहयोग से होली की पूर्व संध्या को फाग उत्सव संगोष्ठी का आयोजन हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा की अध्यक्षा, डॉ. शैलजा सक्सेना के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। वातायन यू.के. की अध्यक्षा, दिव्या माथुर, वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी तथा रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय के प्रवासी भारतीय शोध केंद्र के सलाहकार डॉ. जवाहर कर्णावट विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध गीतकार तथा 'अंतरा' के संपादक श्री नरेंद्र दीपक ने की। संग्रहालय की सचिव करुणा राजुरकर ने स्वागत-वक्तव्य दिया। इस अवसर पर भोपाल के बीस से अधिक रचनाकारों ने गीत, ग़ज़ल, दोहे आदि प्रस्तुत कर श्रोताओं को आनंदित कर दिया। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन सुश्री विशाखा राजुरकर ने किया। स्टेट बैंक साहित्य कला परिषद् के अध्यक्ष श्री गोकुल सोनी तथा संयोजक श्री सुरेश पटवा ने भी संबोधन दिया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की वेबसाइट

विश्व पुस्तक मेला 2026

विश्व पुस्तक मेला 2026 का 53वाँ संस्करण 10 से 18 जनवरी, 2026 तक भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट (NBT), भारत द्वारा शिक्षा मंत्रालय के तत्त्वावधान में तथा इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गनाइज़ेशन (ITPO) के सहयोग से संपन्न हुआ। इस वर्ष मेले की थीम 'भारतीय सैन्य इतिहास शौर्य एवं प्रज्ञा @75' रही। इसके अंतर्गत भारतीय सशस्त्र बलों की वीरता और ऐतिहासिक योगदान को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा किया गया। इस अवसर पर कतर के राजदूत महामहिम मोहम्मद हसन जबिर अल जबिर, कतर के संस्कृति मंत्री महामहिम अब्दुलरहमान बिन हमद बिन जासिम अल थानी, स्पेन के संस्कृति मंत्री श्री अर्नेस्ट उर्टासुन डोमेनेक सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इस वर्ष कतर 'सम्मानित अतिथि देश' तथा स्पेन 'विशेष केंद्र देश' के रूप में शामिल हुए, जिससे अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक और सांस्कृतिक सहयोग को बल मिला।

नौ दिनों तक चले इस मेले में 1,000 से अधिक प्रकाशकों और 35 से अधिक देशों की भागीदारी रही। लगभग 600 से अधिक कार्यक्रम और 1,000 से अधिक वक्ताओं के सत्र आयोजित किए गए। इस वर्ष पहली बार प्रवेश निःशुल्क रखा गया, जिसके कारण लगभग 20 लाख आगंतुकों की भागीदारी दर्ज की गई।

मेले में 500 से अधिक पुस्तकें, प्रदर्शन सामग्री और ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किए गए। उद्घाटन-दिवस पर 'कुडोपाली की गाथा 1857 की अनकही कहानी' पुस्तक के विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा स्पेनिश में अनूदित संस्करणों का विमोचन किया गया।

हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए विशेष रूप से लेखक मंच स्थापित किया गया, जहाँ पुस्तक विमोचन, लेखक-पाठक संवाद, कविता-पाठ और संगोष्ठियाँ आयोजित हुईं। बच्चों के लिए 'बाल मंडप' में कहानी-वाचन और रचनात्मक गतिविधियाँ हुईं। 'राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय' के माध्यम से 6,000 से अधिक निःशुल्क ई-पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं।

साभार : द स्टेट्समैन की वेबसाइट

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् और वैश्विक हिंदी परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में 'डायस्पोरा से संवाद' कार्यक्रम

21 मार्च, 2026 को अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् और वैश्विक हिंदी परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में 'डायस्पोरा से संवाद' एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रवासी भारतीय समुदाय (डायस्पोरा) के माध्यम से हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर मज़बूत करने तथा उनसे सीधा संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वैश्विक परिदृश्य

में हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियों, अवसरों और भविष्य की संभावनाओं पर विचार-विमर्श रहा।

नीलांति राजपक्ष ने श्रीलंका से हिंदी की स्थिति, स्थानीय समुदाय में हिंदी की भूमिका और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर प्रकाश डाला। कथाकार रीता कौशल (सिंगापुर/ऑस्ट्रेलिया से जुड़ी प्रवासी लेखिका) ने प्रवासी साहित्य में हिंदी कहानी और उपन्यास की भूमिका, विदेशों में हिंदी रचनात्मकता की चुनौतियों एवं सफलताओं पर विस्तार से चर्चा की। डेविड एल्मर ने विदेशी दृष्टिकोण से हिंदी भाषा के वैश्विक महत्त्व, सीखने की प्रक्रिया और सांस्कृतिक पुल के रूप में हिंदी पर अपने विचार रखे। श्री वीरेंद्र गुप्ता (पूर्व अध्यक्ष, एआरएसपी तथा पूर्व राजदूत) ने हिंदी को भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का महत्त्वपूर्ण माध्यम बताते हुए डायस्पोरा की भूमिका पर ज़ोर दिया। श्री श्याम परांडे (संयुक्त सचिव, एआरएसपी) ने वैश्विक हिंदी प्रसार की सरकारी एवं संस्थागत पहलों पर प्रकाश डाला। श्री नारायण (निदेशक, एआरएसपी) ने हिंदी की अंतरराष्ट्रीय पहचान मज़बूत करने की आवश्यकता और डायस्पोरा से जुड़ाव पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. दर्शन पांडेय (प्राचार्य, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने की। उन्होंने हिंदी शिक्षा, साहित्य और डायस्पोरा के बीच सेतु बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। धन्यवाद-ज्ञापन श्री अनिल जोशी ने किया।

रिपोर्ट - डॉ. सुशील द्विवेदी

रायपुर साहित्य उत्सव 2026

रायपुर साहित्य उत्सव 2026 का आयोजन 23 से 25 जनवरी, 2026 तक नवा रायपुर अटल नगर स्थित पुरखौती मुक्तांगन परिसर में किया गया। छत्तीसगढ़ की समृद्ध साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपरा को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित यह तीन दिवसीय उत्सव हिंदी भाषा, भारतीय साहित्य और समकालीन विचार-विमर्श का एक सशक्त मंच बनकर उभरा।

इस उत्सव में 'हिंदी साहित्य', 'भारतीय ज्ञान परंपरा', 'संविधान और समाज', 'डिजिटल युग में लेखन', 'पाठक और प्रकाशन की चुनौतियाँ', 'महिला लेखन', 'जनजातीय साहित्य' और 'लोक संस्कृति' जैसे विषयों पर गहन चर्चा की गई।

उत्सव का उद्घाटन राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश द्वारा किया गया। उद्घाटन के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय तथा वर्धा अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति रही। समापन-समारोह में साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों, जिनमें सच्चिदानंद जोशी और चंद्रप्रकाश द्विवेदी शामिल हैं, ने सहभागिता की।

प्रख्यात रंगकर्मी मनोज जोशी द्वारा प्रस्तुत नाटक 'चाणक्य' विशेष आकर्षण का केंद्र बना। इसके अतिरिक्त अभिनेता नीतीश भारद्वाज और फ़िल्म निर्देशक अनुराग बसु की सहभागिता ने साहित्य और सिनेमा के संबंध को और सशक्त रूप में प्रस्तुत किया। 24 जनवरी को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृति में आयोजित विशेष काव्य-पाठ ने हिंदी काव्य परंपरा के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त की।

हिंदी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों को केंद्र में रखते हुए एक पुस्तक मेले का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रभात प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन और राजपाल प्रकाशन सहित अनेक प्रकाशकों ने भाग लिया। आयोजन के लिए चार अलग-अलग साहित्यिक मंडप तैयार किए गए, जिनका नामकरण छत्तीसगढ़ के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के नाम पर किया गया।

साभार : हिंदी इंडिता टाइम्स की वेबसाइट

रूसी और हिंदी साहित्य के अनुवाद के अध्ययन को समर्पित एक अंतरराष्ट्रीय गोलमेज़ चर्चा

21 जनवरी, 2026 को सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश में रूसी और हिंदी साहित्य के अनुवाद के अध्ययन को समर्पित एक अंतरराष्ट्रीय गोलमेज़ चर्चा विक्रम विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विभाग, रशियन हाउस, नई दिल्ली तथा रूसी राज्य मानविकी विश्वविद्यालय के भाषा-विज्ञान संस्थान के संयुक्त सहयोग से आयोजित की गई।

'भारत में रूसी भाषा के अध्ययन' तथा 'रूसी और भारतीय क्लासिक्स के विश्व भाषाओं में अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ' चर्चा के दो प्रमुख विषय थे।

विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफ़ेसर अर्पण भारद्वाज ने उल्लेख किया कि इस शैक्षणिक संस्थान में 1958 से निरंतर रूसी भाषा का अध्ययन हो रहा है। रूस के शिक्षक भारतीय शिक्षकों को रूसी भाषा के शिक्षण हेतु प्रशिक्षित करते थे।

रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फ़ॉर ह्यूमानिटीज़ में हिंदी की शिक्षिका, डॉ. इंदिरा गाज़िएवा ने भाषा-विज्ञान संस्थान में अनुवाद-कार्य की चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों ने रूसी और भारतीय कविताओं के अपने अनुवाद प्रस्तुत किए। अलेक्जेंडर पुश्किन की रचनाओं का हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया।

साभार : रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फ़ॉर ह्यूमानिटीज़ का पोस्ट

दिल्ली में भारत रंग महोत्सव

27 जनवरी से 20 फ़रवरी तक दिल्ली में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय तथा नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा द्वारा भारत रंग महोत्सव आयोजित किया गया। 20 फ़रवरी, 2026 को समापन समारोह में जर्मनी से, डॉ. शिप्रा शिल्पी के लेखन एवं निर्देशन में 'वैश्विक हिंदीशाला संस्थान', जर्मनी एवं 'सृजनी ग्लोबल', यूरोप से श्रीमती प्रियदर्शिनी द्वारका एवं श्रीमती दीप्ति वर्मा द्वारा नाटक 'तीन रंग : एक पहचान' की सशक्त नाट्य प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के शुभकामना-संदेश के साथ किया गया। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध रंगकर्मी, शिक्षक, निर्देशक एवं नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा के पूर्व निदेशक पद्मश्री राम गोपाल बजाज थे। विशिष्ट अतिथि पद्मश्री भरत गुप्ता (वाइस चेयरमैन,NSD), ब्रांड एम्बेसडर सुप्रसिद्ध रंगकर्मी एवं अभिनेत्री सुश्री मीता वशिष्ठ एवं गेस्ट ऑफ़ हॉनर बॉलीवुड के सुविख्यात सशक्त अभिनेता पंकज त्रिपाठी एवं प्रतिष्ठित गीतकार स्वानंद किरकिरे एवं श्री चितरंजन त्रिपाठी (निदेशक, नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा) के सानिध्य में विभिन्न देशों द्वारा प्रस्तुत हिंदी नाटक की झलकियाँ प्रदर्शित की गईं।

आभार : डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना

आभासी कार्यक्रम

(i) हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

8 मार्च, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि के 33वें संस्करण का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य से हुई। नाइजीरिया से सान्वी भाला ने प्रेमचंद रचित 'पंच-परमेश्वर', 'कफ़न', 'दो बैलों की कथा' और 'ईदगाह' कहानियों में प्रेम, त्याग और संवेदनशीलता का विश्लेषण किया। तंज़ानिया के आयुष्मान पाण्डेय ने कबीरदास की जीवनी और साहित्य पर वक्तव्य दिया। श्रीलंका की सत्या मधुभाशीनी ने 'हिम्मत की उड़ान' कविता प्रस्तुत की, जो युवाओं को आत्मविश्वास के साथ कठिनाइयों का सामना करने की प्रेरणा देती है। इंडियन लैंग्वेज स्कूल, नाइजीरिया की हिंदी शिक्षिका गरिमा सिंह ने अनुभवात्मक गतिविधियों और डिजिटल उपकरणों के उपयोग द्वारा साहित्य पढ़ाने की बात की। इंडियन स्कूल, दार एस सलाम की शिक्षिका मेघा रानी ने कहा कि वे अभिनय के माध्यम से साहित्य-पठन को छात्रों के लिए रोचक बनाती हैं। सबरगमुव विश्वविद्यालय, श्रीलंका के प्रो. संगीत रत्नायक ने बताया कि वे कविताओं, गीतों और विज्ञापनों के उदाहरण देते हुए साहित्यालंकार समझाते हैं और रचनाओं को एआई की सहायता से गीत में बदलकर छात्रों को सुनाते हैं। डिगबोई महिला महाविद्यालय, असम के पूर्व एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. हेराम पाठक के अनुसार शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों की रचनात्मक तथा आलोचनात्मक क्षमता विकसित होती है। नीदरलैंड हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(ii) हिंदी में अभिव्यक्ति

14 मार्च, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय के आभासी कार्यक्रम 'हिंदी में अभिव्यक्ति' के 33वें संस्करण में दक्षिण अफ़्रीका से अमांडा नकाबिन्दे ने 'हमको मन की शक्ति देना' प्रार्थना-गीत का गायन किया। लीबिया की हैज़ल ग्रेश निशांत भाटी ने भारत को वीरों का देश बताते हुए तिरंगे की विशेषता पर प्रकाश डाला। ताजिकिस्तान के सलीमोव दौलतशोह ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में अपने हिंदी-अध्ययन के अनुभव को साझा किया। इंडियन इंटरनेशनल स्कूल, बेनगाज़ी, लीबिया से हिंदी शिक्षाविद्, श्रीमती निकहत जलाल कुरैशी ने संवाद-अभ्यास और सामूहिक गतिविधियों द्वारा हिंदी के अध्ययन को आनंददायक बनाने की सलाह दी। इसिपिंगो बीच इंटरमीडिएट स्कूल, दक्षिण अफ़्रीका की हिंदी शिक्षिका, श्रीमती सेसीलिया लोपेज़ ने अफ़्रीकी मूल के बच्चों को हिंदी सिखाने की प्रक्रिया को उजागर किया। सोतिम उलुगज़ोदा ताजिक अंतरराष्ट्रीय विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, ताजिकिस्तान के हिंदी शिक्षक, डॉ. आहतमशाह युनुसी ने बताया कि उनके संस्थान में हिंदी समेत 14 से अधिक भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं। हिंदी सीखने से छात्रों की भाषाई दक्षता में वृद्धि होती है और वे भारतीय संस्कृति से जुड़ते हैं। शासकीय महाविद्यालय, मध्य प्रदेश, भारत के हिंदी प्राध्यापक, डॉ. गोपाल कृष्ण मिश्र ने हिंदी को एक समर्थ और विश्व-बोधमयी संस्कृति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया, नीदरलैंड हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने मंच-संचालन किया तथा श्री संजय भारद्वाज ने आभार-ज्ञापन किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' तथा 'हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रमों के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल: https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

12 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में 'थाईलैंड में हिंदी भाषा की स्थिति' विषय पर शिल्पाकर्ण विश्वविद्यालय थाईलैंड के सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर डॉ. परमत खाम का साक्षात्कार लिया गया। डॉ. परमत खाम पिछले 20 वर्षों से थाईलैंड में हिंदी का अध्यापन कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि थाईलैंड में निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार हिंदी की पढ़ाई होती है, जिससे विद्यार्थियों को भाषा सीखने में आसानी होती है। अनेक विद्यार्थी भारतीय संस्कृति को समझने और भारतीय परंपराओं से परिचित होने के उद्देश्य से तथा बॉलीवुड फ़िल्मों के प्रति आकर्षण के कारण हिंदी सीखते हैं। उन्हें हिंदी सिखाने के लिए शिक्षण-प्रक्रिया में थाई भाषा का सहारा लिया जाता है। आधुनिक प्रौद्योगिकी, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का भी उपयोग किया जा रहा है। डॉ. परमत खाम स्वयं हिंदी पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं तथा परीक्षाओं का आयोजन करते हैं। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉ. परमत खाम एक के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

26 जनवरी, 2026 को प्रसारित विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में 'सिंगापुर में हिंदी-शिक्षण की स्थिति' पर श्रीमती प्रसून सिंह से वार्ता हुई। वे भारत में एक वर्ष पढ़ाने के बाद पिछले 18 वर्षों से सिंगापुर में हिंदी-शिक्षण से जुड़ी हुई हैं और सिंगापुर की हिंदी सोसाइटी के माध्यम से हिंदी के प्रचार में संलग्न हैं। उन्होंने बताया कि सिंगापुर के स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को स्थान दिया गया है। इसे प्राथमिक से ए-लेवल तक मातृभाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। हिंदीभाषी बच्चे ही नहीं, अपितु अन्य भाषाओं के बच्चे भी हिंदी सीखते हैं। बच्चों के लिए हिंदी में खेल, गीत, कहानी, नाटक आदि कार्यक्रम होते हैं। सिंगापुर की सरकार सप्ताहांत और विशेष कक्षाओं के माध्यम से वयस्कों और अभिभावकों को भी हिंदी सीखने का अवसर देती है। हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों को एलुमनी क्लब के माध्यम से भविष्य की योजनाओं से जोड़ा जाता है। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने श्रीमती प्रसून सिंह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

9 फ़रवरी, 2026 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में 'कुली से कुलीन तक का सफ़र' पुस्तक पर डॉ. दीप्ति अग्रवाल का साक्षात्कार लिया गया। पी.एच.डी. के स्तर पर डॉ. दीप्ति अग्रवाल का शोध-विषय गिरमिट श्रमिकों का इतिहास रहा। उन्होंने फ़िजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना तथा दक्षिण अफ़्रीका में औपनिवेशिक काल के दौरान अनुबंधित श्रमिकों के संघर्ष पर अनुसंधान किया। भारतीय इतिहास में गिरमिटिया मज़दूरों के विषय में पर्याप्त उल्लेख नहीं हुआ है। इसलिए शोध के दौरान उन्होंने गिरमिट देशों की यात्रा की और वहाँ के इतिहास का गहराई से अध्ययन किया। भारतीय शर्तबद्ध मज़दूरों के अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उन्होंने कविता लिखनी शुरू की। धीरे-धीरे कविताएँ संग्रहित होती गईं और अंततः 'कुली से कुलीन बनने का सफ़र' पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों के संघर्ष को समझने की प्रेरणा देगी और भारतीय प्रवासी समुदाय के इतिहास को उजागर करने में महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ साबित

होगी। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉ. दीप्ति अग्रवाल के प्रति आभार व्यक्त किया।

23 फ़रवरी, 2026 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में नेपाल से पधारीं, डॉ. भावना पराजुली के काव्य-लेखन पर संवाद किया गया। डॉ. भावना पराजुली मूल रूप से नेपाली हैं और कोरोना के बाद उन्होंने हिंदी में लिखना आरंभ किया। उन्होंने अपनी प्रमुख कविताओं 'तू ही मेरा' और 'मन रे तू धीरे-धीरे चल' का पाठ किया। डॉ. भावना पराजुली पिछले 15 वर्षों से नेपाल के संसद एवं वरिष्ठ अधिकारियों को योग का प्रशिक्षण दे रही हैं। उन्होंने कहा कि कविता और योग आपस में जुड़े हुए हैं और जीवन को सहज बनाने तथा मन को नियंत्रित करने में दोनों सहायक हैं। डॉ. भावना पराजुली के काव्य-संग्रह में कुल 101 कविताएँ हैं, जिनमें 50 हिंदी और 51 नेपाली कविताएँ शामिल हैं। उनके अनुसार नेपाली और हिंदी के समन्वय से हृदय की भावनाओं का सुंदर चित्र सामने आता है। इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती कल्पना लालजी ने डॉ. भावना पराजुली को धन्यवाद ज्ञापित किया।

9 मार्च, 2026 को विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में भारत से पधारे, डॉ. हिंग्लाज दान रत्नू का साक्षात्कार 'हिंदी-शिक्षण में नवाचार' विषय पर लिया गया। डॉ. हिंग्लाज दान रत्नू चारण जाति से हैं। वे कविता, छंद, दोहा, चौपाई जैसी पारंपरिक लेखन शैलियों में निपुण हैं और डिंगल, पिंगल, हिंदी तथा राजस्थानी भाषाओं में रचनाएँ करते हैं। उन्होंने अपने साहित्यिक विकास का श्रेय अपने पिता को दिया, जो डिंगल के प्रख्यात कवि थे और जिनसे उन्होंने बचपन में ही काव्य-लेखन की शिक्षा प्राप्त की। उनके अनुसार लेखन केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि इसे समाज तक पहुँचाना आवश्यक है, क्योंकि पुस्तकों और लेखों के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को स्थापित कर सकता है। शिक्षा के संदर्भ में उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों में सीखने की रुचि उत्पन्न करने के लिए शिक्षण-पद्धतियों में नवाचार अनिवार्य है। साहित्यिक सामग्री और शिक्षण-विधियों को समयानुकूल आधुनिक बनाया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ सकें। उनका विचार है कि नवाचार और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। इससे न केवल नई पीढ़ी को प्रेरणा मिलती है, बल्कि साहित्य, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन भी संभव होते हैं। इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती कल्पना लालजी ने डॉ. हिंग्लाज दान रत्नू के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

23 मार्च, 2026 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय का 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित हुआ। इसमें यूएई से पधारे श्री कुल भूषण व्यास का 'हाइकु लेखन' विषय पर साक्षात्कार लिया गया। हाइकु के जनक मात्सुओ बाशो माने जाते हैं, जिन्होंने सोलहवीं शताब्दी में हाइकु का विकास किया। भारत में हाइकु के परिचय का श्रेय रवीन्द्रनाथ टैगोर को दिया जाता है, जिन्होंने जापान से लौटकर इस विधा को भारतीय साहित्य में स्थान दिलाया। हिंदी हाइकु के विकास में डॉ. सत्य भूषण वर्मा का विशेष योगदान रहा। उन्होंने जापानी भाषा से सीधे हिंदी में हाइकु का अनुवाद कर इसे नई दिशा दी। उन्होंने बताया कि हाइकु तीन पंक्तियों की एक लघु कविता होती है, जिसमें 5-7-5 अक्षरों का क्रम होता है। उन्होंने हाइकु लेखन को एक साधना बताते हुए कहा कि इसके लिए गहन चिंतन, मनन एवं अनुभूति आवश्यक है। इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती कल्पना लालजी ने श्री कुल भूषण व्यास के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

डॉ. इंदु बरोट द्वारा संकलित व अनुवादित, श्री तेजेंद्र शर्मा की दस प्रतिनिधि कहानियों के संग्रह का विमोचन

28 फ़रवरी से 1 मार्च 2026 तक सीहोर, मध्य प्रदेश में आयोजित सीहोर लिटरेचर फ़ेस्टिवल के अंतर्गत डॉ. इंदु बरोट द्वारा संकलित व संस्कृत में अनुवादित, श्री तेजेंद्र शर्मा की दस प्रतिनिधि कहानियों के संग्रह का 28 फ़रवरी को लोकार्पण हुआ।

साभार : शिवना प्रकाशन / इंदु बरोट का पोस्ट

श्रीमती अर्चना उपाध्याय की पुस्तक 'ससुराल गेंदा फूल' का लोकार्पण

11 जनवरी, 2026 को विख्यात वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल द्वारा दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में श्रीमती अर्चना उपाध्याय की पुस्तक 'ससुराल गेंदा फूल' का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार सुभाष चंदर, रिंकल शर्मा और सविता चड्ढा सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

साभार : आद्विक पब्लिशर्स का पोस्ट

सम्मान एवं पुरस्कार

साहित्य अकादमी पुरस्कार 2025

साहित्य अकादमी ने 16 मार्च, 2026 को भारतीय भाषाओं में साहित्य अकादमी पुरस्कार 2025 के विजेताओं की घोषणा की। निर्णायक मंडल के प्रतिष्ठित सदस्यों द्वारा अनुशंसित इन पुरस्कारों को साहित्य अकादमी के सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित किया गया। सभी पुरस्कार 31 मार्च, 2026 को नई दिल्ली में प्रदान किए गए।

इस वर्ष आठ काव्य-संग्रह, चार उपन्यास, छह लघु कथाएँ और दो निबंधों को साहित्य अकादमी पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, एक साहित्यिक आलोचना, एक आत्मकथा और दो संस्मरणों का भी चयन किया गया। प्रख्यात लेखिका ममता कालिया को उनके हिंदी संस्मरण 'जीते जी इलाहाबाद' के लिए सम्मानित किया गया।

नई दिल्ली में आयोजित होने वाले पुरस्कार समारोह में सभी चयनित पुरस्कार विजेताओं को एक लाख रुपये की राशि के साथ एक उत्कीर्ण तांबे की पट्टिका प्रदान की गई।

साभार : न्यूज़ ऑन एयर की वेबसाइट

पद्मश्री पुरस्कार 2026

पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जो तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं : पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री। ये पुरस्कार कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामलों, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों में दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। वर्ष 2026 के लिए, राष्ट्रपति ने 131 पद्म पुरस्कारों की घोषणा की है, जिनमें हिंदी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सेवा व योगदान के लिए श्री कैलाश

चंद्र पंत (भारत) एवं डॉ. ल्यूडमिला विक्टोरोवना खोखलोवा (रूस) के नाम शामिल हैं।

हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और शिक्षा के क्षेत्र में दशकों तक निरंतर योगदान देने वाले वरिष्ठ लेखक, पत्रकार और समाजसेवी 90 वर्षीय श्री कैलाश चंद्र (कैलाश चंद्र पंत) को पद्मश्री सम्मान 2026 से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई। यह सम्मान उन्हें साहित्यिक साधना, भाषा सेवा और सामाजिक-शैक्षणिक चेतना को सशक्त करने के लिए प्रदान किया जाएगा।

रूस से डॉ. ल्यूडमिला विक्टोरोवना खोखलोवा को भारत-रूस सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए तथा हिंदी सेवा के लिए यह सम्मान दिया जा रहा है। डॉ. खोखलोवा ने हिंदी में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है और भाषाई टायपोलोजी (Linguistic Typology) का अध्ययन भी किया है। वे मॉस्को विश्वविद्यालय में हिंदी और भाषा-विज्ञान की प्रोफ़ेसर हैं। 8वें विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यू-यॉर्क में हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान के लिए उनको 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है।

इसके अलावा, 2025 में निमाड़ी-हिंदी लेखक जगदीश जोशीला और 101 वर्षीय साहित्यकार रामदरश मिश्र को भी यह सम्मान मिला है।

साभार : गृह मंत्रालय, भारत सरकार – 25 जनवरी, 2026 विज्ञप्ति / अमर उजाला

जर्मनी में डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना को सम्मान

30 जनवरी, 2026 को विश्व हिंदी दिवस, 2026 के अवसर पर 'विकसित भारत 2047 : प्रवासी भारतीयों की भूमिका' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और इंडो-जर्मन संस्कृतियों को साहित्य के माध्यम से निरंतर जोड़ने में महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु कोलोन, जर्मनी की सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, साहित्यकार, संपादक, मीडिया प्रोफ़ेशनल, रंगकर्मी एवं पत्रकार डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना को भारत के प्रधान कौंसुलावास, फ्रैंकफर्ट द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ. शिप्रा को यह सम्मान माननीया श्रीमती शुचिता किशोर द्वारा दिया गया। इस अवसर पर भारतीय डायस्पोरा के प्रतिष्ठित सदस्यों की उपस्थिति रही।

आभार : डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना

श्रद्धांजलि

कथाकार ज्ञानरंजन

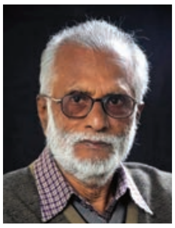

7 जनवरी, 2026 को साहित्यिक पत्रिका 'पहल' के संपादक व विख्यात कथाकार ज्ञानरंजन का जबलपुर में निधन हो गया। साठोत्तरी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर ज्ञानरंजन का जन्म 21 नवंबर, 1936 को हुआ था। वे वरिष्ठ साहित्यकार रामनाथ सुमन के पुत्र थे। उन्होंने अपने नवाचारी सृजन से हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार और साठोत्तरी पीढ़ी के साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की और वे जीएस कॉलिज, जबलपुर में हिंदी के प्रोफ़ेसर रहे। 'दिवास्वप्नी' उनकी पहली कहानी थी। इसके बाद 'कबाड़खाना', 'क्षणजीवी', 'सपना नहीं', 'फेंस के इधर और उधर' के अलावा वे 'प्रतिनिधि कहानियाँ' जैसे संग्रहों और अपनी अनूठी शैली व भाषा के लिए चर्चित हुए। जबलपुर के जीएस कॉलिज से 1996 में वे सेवानिवृत्त हुए थे। वे साठोत्तरी पीढ़ी के प्रमुख कथाकारों में से एक माने जाते हैं, जिन्हें चार यार ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, रवीन्द्र कालिया के रूप में जाना जाता था। कहानियों में काव्यात्मकता और भाषा, तेवर व कहन के अनूठे प्रयोग के लिए वे प्रसिद्ध हैं। उन्होंने 'पहल' पत्रिका का 35 वर्षों तक सफल संपादन और प्रकाशन किया, जो हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में से एक है।

'सोवियत लैंड नेहरू आवर्ड', 'साहित्य भूषण सम्मान', 'शिखर सम्मान', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' और ज्ञानपीठ का 'ज्ञानगरिमा मानद अलंकरण' सहित उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए। उनकी कहानियों का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है और कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में ये शामिल हैं। उनके जीवन और कृतित्व पर भारतीय दूरदर्शन द्वारा एक फ़िल्म बनाई गई है।

साभार : जागरण

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव के कार्यकाल के समापन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. शुभंकर मिश्र ने भारतीय पक्ष की ओर से 24 फ़रवरी, 2023 को विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव पद का कार्यभार संभाला। उनका कार्यकाल 23 फ़रवरी, 2026 को समाप्त हुआ। सचिवालय में उपमहासचिव पद से निवृत्ति के पश्चात् 4 मार्च, 2026 को उन्होंने मॉरीशस से भारत के लिए प्रस्थान किया। तीन वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने हिंदी के वैश्विक प्रचार में अपना अमूल्य योगदान दिया और हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी जगत् की ओर से डॉ. शुभंकर मिश्र को उनकी सेवाओं एवं उनके योगदान के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद एवं भावी योजनाओं के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दी जाती हैं।

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups vishwahindisachivalay/

संपादकीय

भारतेतर देशों में धार्मिक संस्थाओं एवं मंदिरों द्वारा हिंदी का विकास

धर्म और संस्कृति से हिंदी भाषा का अभिन्न संबंध है। भारतीय मूल के लोग विश्व में जहाँ भी प्रवास करते हैं, वहाँ धर्म और संस्कृति से जुड़े रहने के लिए हिंदी भाषा को सँजोकर रखने का प्रयास करते हैं। सारी दुनिया में भारतवंशियों द्वारा धार्मिक संस्थाएँ और मंदिर स्थापित किए गए हैं। इनमें पूजा-पाठ से लेकर धर्मोपदेश, भजन-कीर्तन, प्रवचन, शिक्षण, लेखन आदि कार्य हिंदी में होते हैं। धार्मिक संस्थाओं और मंदिरों की हिंदी के विकास में महती भूमिका रही है।

गिरमिटिया देशों में धार्मिक संस्थाओं और मंदिरों की संख्या सर्वाधिक है। मॉरीशस में 'आर्य सभा', 'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा', 'सनातन धर्म टेम्पल्स फ़ेडेरेशन', 'गहलोत राजपूत महासभा', 'शिवोपासक सभा', 'रामायण सेंटर', 'सद्गुरु कबीर फ़ेडेरेशन', 'ब्रह्म कुमारी सेंटर', त्रिनिदाद में 'सनातन धर्म महासभा', 'स्वाहा', 'इस्कॉन', 'आर्य समाज', फ़िजी में 'आर्य प्रतिनिधि सभा', 'श्री सनातन धर्म महासभा', 'फ़िजी सेवा संग', 'संगम', गयाना में 'आर्य समाज' और 'गयाना हिंदू धार्मिक सभा', दक्षिण अफ़्रीका में 'आर्य समाज' और 'रामायण सभा', सूरीनाम में 'आर्य समाज', 'सनातन धर्म सभा', 'कबीर संस्था सूरीनाम' आदि अनेक संस्थाओं ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी की सेवा की है। इनके द्वारा संचालित सैकड़ों मंदिरों में पंडित-पुजारी हिंदी में उपदेश देते हैं। भारत से भी साधु-संन्यासी इन देशों में पहुँचकर हिंदी में धर्म का प्रचार करते हैं। डॉ. जयप्रकाश कर्दम अपने शोध-लेख 'मॉरीशस में हिंदी : एक सर्वेक्षण' में लिखते हैं -

"वहाँ पर मंदिरों में अधिकांश पुजारी भारत से आते हैं, जो प्राय: बिहार और उत्तर प्रदेश से होते हैं। ये पंडित और पुजारी अपने प्रवचन हिंदी में देते हैं। कहा जा सकता है कि मॉरीशस में हिंदी के प्रसार में इस पंडित-पुजारी वर्ग की बहुत बड़ी भूमिका है।"

इसी प्रकार दक्षिण अफ़्रीका में स्वामी भवानी दयाल के आगमन की चर्चा करते हुए श्रीमती चंपा वशिष्ठमुनी लिखती हैं -

"भारत से स्वामी भवानी दयाल और अन्य कार्यकर्ता दक्षिण अफ़्रीका पधारे। मज़दूरों की दुर्दशा और खासकर हिंदी के दुरुपयोग से वे विचलित हुए।... उन्होंने लोगों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। समाज में रुचि पनपने लगी। शनै:-शनै: पैसों का संग्रह होने लगा और शहर-शहर में मंदिर स्थापित हुए। ... मंदिरों में हिंदी की पढ़ाई आरंभ होने लगी।"

गिरमिटिया देशों के अतिरिक्त दुनिया के अन्य देशों में भी मंदिरों में हिंदी में भजन-प्रवचन होते हैं। श्रीमती अर्चना पैन्यूली कहती हैं - "डेनमार्क के भारतीय मंदिर में हरेक वर्ष रामायण, महाभारत, दुर्गा अष्टमी पर हिंदी में प्रवचन आयोजित होते रहते हैं। भारतीय समाज की पुरानी व नई पीढ़ी भारी संख्या में सुनने आती है।" प्रो. सीताराम पोद्दार जमैका के मंदिरों में हिंदी के वातावरण का वर्णन करते हैं -

"किंग्सटन, जमैका में दो मंदिर हैं - सनातन धर्म मंदिर और प्रेमा सत्संग मंदिर, जहाँ पूजा-पाठ, भजनादि हिंदी में ही होते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन पर हिंदी में ही गीत नृत्यादि होते हैं।"

विश्व भर की धार्मिक संस्थाओं एवं मंदिरों ने हिंदी-शिक्षण का भी बीड़ा उठाया। सायंकाल अथवा सप्ताहांत में मंदिरों में हिंदी की कक्षा होती है। श्रीमती भावना सक्सेना सूरीनाम का उदाहरण देते हुए लिखती हैं - "यहाँ कुल मिलाकर लगभग 134 मंदिर व धार्मिक केंद्र/सभाएँ हैं। इन मंदिरों में प्रार्थना के अतिरिक्त हिंदी भाषा व धर्म संबंधी शिक्षा दी जाती है।"

इसी प्रकार ब्रिटेन के मंदिरों में हिंदी शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है। श्री राकेश दुबे के अनुसार -

"अकेले लंदन में ही कम-से-कम सात ऐसे केंद्र हैं, जहाँ नियमित तौर पर हिंदी पढ़ाई जाती है। मंदिरों, सामुदायिक केंद्रों में चलाई जा रही इन हिंदी कक्षाओं के लिए भारतीय उच्चायोग भी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराता है।"

नॉर्वे के मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान के अलावा हिंदी पढ़ाई जाती है -"सनातन मंदिर सभा की ओर से ओस्लो में हिंदी की कक्षा चलाई जाती है, ताकि आप्रवासी बच्चों को हिंदी के साथ-साथ संस्कार भी मिले।" प्रशांत महासागर की ओर यदि दृष्टि डाली जाए, तो ऑस्ट्रेलिया एवं फ़िजी के अतिरिक्त न्यूज़ीलैंड में भी धर्म-प्रचार के क्षेत्र में हिंदी-शिक्षण को महत्त्व दिया जाता है। डॉ. सतेन्द्र कुमार सिंह का कथन है -

"ऑकलैंड और वेलिंगटन के आस-पास कई मंदिरों में हिंदी सफलतापूर्वक फल-फूल रही है। भारतीय मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, हरे कृष्णा मंदिर परिसर और स्वामी नारायण मंदिर, जो सभी ऑकलैंड में हैं, इन भाषाओं की शिक्षण-कक्षाओं के माध्यम से भारतीय समाज की बेहतर सेवा करते हैं।"

यह उल्लेखनीय है कि धार्मिक संस्थाओं व मंदिरों का लेखन-कार्य भी हिंदी में होता है। हवन, यज्ञ, पूजा, वार्षिकोत्सव आदि के निमंत्रण-पत्र हिंदी में निकलते हैं। समारोहों के विवरण एवं बैठकों के कार्यवृत्त हिंदी में लिखे जाते हैं। धार्मिक संस्थाओं द्वारा पत्रिकाएँ भी विशुद्ध हिंदी में प्रकाशित होती हैं। फ़िजी में 'वैदिक संदेश', 'सनातन धर्म', 'सनातन प्रकाश', जागृति', सूरीनाम में 'आर्य दिवाकर', 'धर्म प्रकाश', 'सूरीनाम दर्पण', 'शांतिदूत', 'प्रेम संदेश', इंग्लैंड में 'वैदिक पब्लिकेशन्स', नेपाल में 'आर्य युवक जागृति', मॉरीशस में 'मॉरीशस आर्य पत्रिका', 'आर्यवीर', 'सनातन धर्मांक', 'आर्यावर्त्त', 'जागृति', 'आर्यवीर जागृति' 'आर्योदय', 'दर्पण' आदि अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन अलग-अलग धार्मिक संस्थाओं द्वारा होता रहा है। गयाना में हिंदी पत्रकारिता के विषय में डॉ. कमल किशोर गोयनका लिखते हैं - "यहाँ भी आर्य समाज ने 'आर्य ज्योति' तथा सनातन धर्म सभा ने 'अमर ज्योति' पत्र प्रकाशित किए।"

अनुपम धार्मिक शक्ति के बल पर भारतीय मूल के लोगों ने सारी दुनिया में धार्मिक संस्थाओं एवं मंदिरों की स्थापना की। भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म की रक्षा करने हेतु हिंदी भाषा के विकास को अनिवार्य समझा गया। यही कारण है कि धार्मिक संस्थाओं और मंदिरों ने स्वैच्छिक रूप से हिंदी का प्रचार किया और वैश्विक स्तर पर हिंदी को गरिमा प्रदान की।

डॉ. माधुरी रामधारी

महासचिव